नमिोनयिा एवं डायरयिा प्रगतरिपिोर्ट

प्रलिमि्स के लयि:

नमिोनयिा तथा डायरयिा प्रोग्रेस रपिोर्ट

मेन्स के लयि:

नमिोनयिा तथा डायरयिा उन्मूलन में नहिति समस्याएँ

चर्चा में क्यों?

हाल ही में 'इंटरनेशनल वैक्सीन एक्सेस सेंटर' (International Vaccine Access Centre) द्वारा जारी 'नमिोनयिा एवं डायरयिा प्रगतरिपिोर्ट' के अनुसार, भारत ने नमिोनयिा और डायरयिा के कारण बच्चों की मृत्यु के मामलों की रोकथाम हेतु अपने टीकाकरण कवरेज में महत्त्वपूर्ण प्रगतकिी है।

प्रमुख बदिु:

- रपिोर्ट के अनुसार, वर्तमान में COVID-19 के कारण वशि्व भर में स्वास्थ्य क्षेत्र पर अतरिक्ति दबाव के बावजूद भारत इस रपिोर्ट में शामलि 5 में से 3 वैक्सीन के वैश्वकि लक्ष्य को 90% तक पूरा करने में सफल रहा है।
- गौरतलब है कि इस रपिोर्ट में डप्थिीरयिा, काली खांसी और टटिनेस (डीपीटी) वैक्सीन, खसरा-नयिंत्रण-वैक्सीन की पहली खुराक, हीमोफलिस इन्फ्लुएंज़ा टाइप बी, न्यूमोकोकल कंजुगेट वैक्सीन (पीसीवी) और रोटावायरस वैक्सीन को शामलि कयिा जाता है।
- इस रपिोर्ट के अनुसार, भारत में रोटावायरस वैक्सीन के कवरेज में 18% की वृद्धि और न्यूमोकोकल नमिोनयिा के खलिाफ वैक्सीन कवरेज में 9% की वृद्धि देखने को मलिी है।
- गौरतलब है कि प्रत्येक वर्ष 12 नवंबर को 'वशि्व नमिोनयिा दविस' मनाया जाता है।

नमिोनयिा एवं डायरयिा प्रगतरिपिोर्ट:

- नमिोनयिा तथा डायरयिा प्रगतरिपिोर्ट को 'जॉन हॉपकसि ब्लूमबर्ग स्कूल ऑफ़ पब्लकि हेल्थ' (Johns Hopkins Bloomberg School of Public Health) की संस्था इंटरनेशनल वैक्सीन एक्सेस सेंटर (International Vaccine Access Center- IVAC) द्वारा वार्षकि रूप से प्रकाशति कयिा जाता है।

सरकार के प्रयास:

- 100 डे एजेंडा: वर्ष 2019 में भारत ने रोटावायरस वैक्सीन से संबंधति राष्ट्रीय स्तर पर चलाए गये अभयिान को पूरा कयिा। वैक्सीन की पहुँच में वस्तिार के चलते प्रतविर्ष जन्म लेने वाले 26 मलियिन बच्चों को रोटावायरस डायरयिा के खतरे से बचाने में सहायता प्राप्त होगी।
  - गौरतलब है कि अगस्त 2019 में केंद्रीय स्वास्थ्य और परविार कल्याण मंत्री ने सरकार के 100 दनि के एजेंडे के तहत देश के सभी राज्यों और केंद्रशासति प्रदेशों में बच्चों के लयि रोटावायरस वैक्सीन उपलब्ध कराने की बात कही थी।
- इस रपिोर्ट में 10 संकेतकों पर नमिोनयिा और डायरयिा से होने वाली मौतों को रोकने के लयि सरकारों के प्रयास का मूल्यांकन कयिा गया, इन संकेतकों में स्तनपान, टीकाकरण, एंटीबायोटकि, ओआरएस (Oral Rehydration Solution-ORS), जकि सप्लीमेंट आदि शामलि हैं।
- इस रपिोर्ट में शामलि 15 देशों में सरि्फ 4 देश (भारत सहति) ही ऐसे थे, जो अनन्य स्तनपान (58%) के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहे।
- हालाँकि इस रपिोर्ट में शामलि लगभग सभी देश नमिोनयिा और डायरयिा का उपचार सुनश्चिति कराने की दशिा में पछिड़ते दखिाई दयि, जबकि भारत उपचार के सभी चार लक्ष्यों को प्राप्त करने में असफल रहा।

कारण:

- रपिोर्ट के अनुसार, वर्ष 2019 के दौरान भारत में महत्त्वपूर्ण प्रगति देखने को मलिी थी, परंतु COVID-19 महामारी के कारण स्वास्थ्य क्षेत्र पर

बढ़ रहे दबाव के कारण टीकाकरण और चिकित्सीय ऑक्सीजन की पहुँच प्रभावित हुई है।

चुनौतियाँ:

- भारत को किसी भी अन्य देश की तुलना में पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों में निमोनिया और डायरिया से होने वाली मौतों का अधिक भार सहना पड़ता है।
- एक अनुमान के अनुसार, भारत में निमोनिया और डायरिया के कारण प्रतिवर्ष पाँच वर्ष से कम आयु के लगभग 2,33,240 बच्चों की मृत्यु हो जाती है।
- रिपोर्ट के अनुसार, भारत में डायरिया के उपचार की कवरेज सबसे कम रही, इसके साथ ही मात्र 51% बच्चों को ओआरएस और 20% बच्चों को ही जिंक सप्लीमेंट उपलब्ध हो पाता है।
    - रिपोर्ट के अनुसार, जिंक और ओआरएस को एक साथ देने पर यह डायरिया से होने वाली मौतों को कम करने में काफी प्रभावी सिद्ध होता है।
- IVAC के एक वरिष्ठ सलाहकार के अनुसार, निमोनिया और डायरिया के कारण प्रतिवर्ष होने वाली मौतों को टीके और सरल सिद्ध उपचारों के माध्यम से रोका जा सकता है जो हमारे पास पहले से ही उपलब्ध हैं, ऐसे में COVID-19 महामारी के उपचार की खोज के बीच इन बीमारियों से निपटने के प्रयासों से ध्यान नहीं हटाया जाना चाहिये।

COVID-19 वैक्सीन और भारत:

- हाल में बहुराष्ट्रीय दवा निर्माता कंपनी फाईज़र के साथ अमेरिकी कंपनी मॉडर्ना ने COVID-19 के लिये अपनी-अपनी वैक्सीन के 90% से अधिक प्रभावी होने की घोषणा की है, जबकि बहुत से अन्य वैक्सीन के परीक्षण अपने अंतिम चरण में हैं।
- इन परिणामों के बाद विश्व में इस महामारी से लड़ने की एक नई उम्मीद जगी है, हालाँकि भारत में सीरम इंस्टीट्यूट या भारत बायोटेक द्वारा विकसित वैक्सीन के तीसरे चरण के परीक्षण अभी व्यापक रूप से नहीं संचालित हुए हैं।
- सरकार द्वारा फाईज़र वैक्सीन की कुछ खुराक प्राप्त करने के संदर्भ में उसके प्रतिनिधियों से भी बातचीत की जा रही है।
- हालाँकि इस वैक्सीन को लगभग -70°C तापमान पर रखा जाना अनिवार्य बताया गया है, ऐसे में इस क्षेत्र में बुनियादी ढाँचे का अभाव भारत के लिये एक चुनौती बन सकता है।
- इस वैक्सीन की सफलता से वैज्ञानिकों द्वारा कोरोना वायरस के स्पाइक्ड प्रोटीन को लक्षित करने की रणनीति सही सिद्ध हुई है। गौरतलब है कि अधिकांश वैक्सीन निर्माताओं द्वारा इसी पद्धति का उपयोग किया जा रहा है ऐसे में भविष्य में वैक्सीन के विकास में कई अन्य सकारात्मक परिणामों की संभावनाएँ मज़बूत हुई हैं।
- साथ ही यह भी संभव है कि इस प्रकार की तकनीक भविष्य में अन्य बीमारियों के लिये वैक्सीन निर्माण में सहायक हो सकती है।

आगे की राह:

- भारत को ऐसी तकनीकों पर पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्थानीय स्तर पर इन क्षेत्रों में विशेषज्ञता विकसित करने का प्रयास करना चाहिये।
- साथ ही भारत को अपनी कोल्ड चेन अवसंरचना को मज़बूत करने पर विशेष ध्यान देना होगा, जो वर्तमान में साधारण वैक्सीन के लिये ही उपयुक्त है।

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/pneumonia-and-diarrhoea-progress-report-1